बस में सवार हो मैं अपने मित्र बसन्त के घर माल्डन जा रहा हूँ। इंग्लैण्ड की ससेक्स काउंटी में यह एक छोटा गाँव है। माल्डन के पास एक कस्बा है – हेब्रिज। कस्बे में घुसने से पहले एक फार्म है जेकब्ज़ फार्म! यह फार्म ही मेरे चित्रकार मित्र का घर है यानी निपट देहात ही समझो।

बरतानवी कस्बे में कुछ घुरटे दिन

दिलीप चिंचालकर

लन्दन छोड़े एक घण्टा हो गया है! ग्रामीण नज़ारा शुरू होने का इन्तज़ार है। सड़क के दोनों ओर सफाई से कटी दूब, फूलों की क्यारियाँ और फुटपाथ दिखाई दे रहे हैं। लन्दन भी कुछ ऐसा ही लगता था। भीड़भाड़ ज़रा भी नहीं, जबकि वह दुनिया के चार बड़े महानगरों में से एक है।

बस ड्राइवर जेकब्ज़ फार्म जानता है। उसने बस वहीं रोकी। मेरे स्वागत के लिए बसन्त सामने खड़ा है। किलकारी मारते हुए मैंने पूछा कि भई तुम्हें प्रतीक्षा करनी पड़ी होगी? उसने कहा, "नहीं 3.05 की बस थी, 3.05 हो रहे हैं। बस आगे-पीछे होती तो 3.04 पर आती या 3.06 पर।"

"अच्छा, बताओ तुमने खाना खा लिया?" उसने पूछा।

मेरे नहीं कहने पर बसन्त उसकी व्यवस्था करने में लग गया। रसोईघर में तीन कुर्सियाँ, एक बेंच, एक गैस भट्टी और बाकी सिंक, अलमारी वगैरह हैं। कोने में खूँटियों पर हर तरह के रंगीन-सादे चाय के कप लटक रहे हैं। खुली खिड़कियों से बाहर की हरियाली और सुन्दर फूल दिखाई दे रहे हैं।

देवदार के शहतीरों पर टिकी नीची छत वाला यह मकान बहुत बड़ा और शानदार है। छह सौ साल पुराना। जब यह बना तब हिन्दुस्तान में अलाउद्दीन, खिलजी का राज था। इस घर में दो ही लोग रहते हैं – बसन्त और डंकन मैकक्रिडी। और अब तीसरा मैं।

फार्म और दुकान पर काम करने वाले दिन भर रसोईघर में आते-जाते रहते हैं। उन्हीं के ये सारे कप हैं। गैस भट्टी पर हरदम पानी की केतली गरम होती रहती

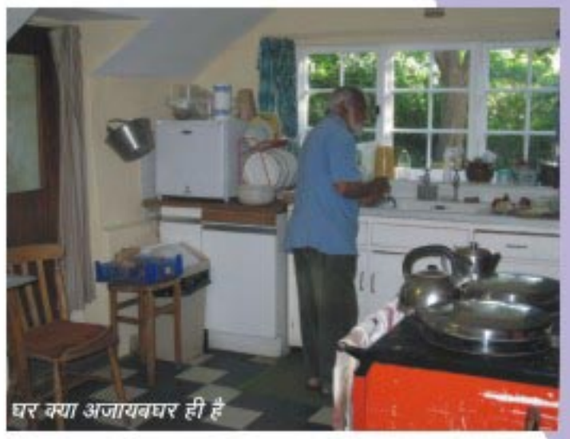

घर क्या अजायबघर ही है

है। भट्टी दिन-रात चलती है और घर को गर्म रखती है। हर आने-जाने वाले की अपनी पसन्दीदा कुर्सी है। जिस बेंच पर मैं बैठा ताक रहा हूँ वह डंकन के बूढ़े बिल्ले का है। अब उसकी उम्र हो चली है, इसलिए वह भट्टी के पास वाली कुर्सी पर ऊँघना पसन्द करता है। मैं बेंच पर बैठ सकता हूँ।

खाना आ गया। खाना क्या...हरी कच्ची सब्ज़ियाँ, कटे हुए कुछ टमाटर और खुँबियाँ, भूरी डबलरोटी जिसके साथ कुछ सालन है। लगता है बसन्त ने टाल दिया। मैंने इत्मीनान और तहज़ीब के साथ काँटे-छुरी से वह सब खा डाला। इतना बुरा नहीं लगा। ईमानदारी से कहूँ तो अच्छा ही लगा। दोबारा खाना पसन्द करूँगा। शाम को वैसा ही कच्चा खाना मिला। दूसरे दिन भी। और जब तक जेकब्ज़ फार्म पर रहा यही सब खाता रहा।

यह खाना न उबला हुआ है, न भुना, न इसमें छौंक लगा है। खुँबियों को ज़रूर धुँआ दिया हुआ है। नमक या काली मिर्च कुछ भी नहीं है। डंकन का कहना है कि सब्ज़ियों में वैसे ही नमक की मात्रा काफी रहती है। मज़े की बात है कि यहाँ (माल्डन) का नमक पूरे इंग्लैण्ड में प्रसिद्ध है। इसकी पतली-पतली पपड़ियाँ होती हैं। देखने में सुन्दर और चखने में स्वादिष्ट।

हम शाम 7 बजे खाना खा लेते और फिर रात 9 बजे कुछ मीठा खाते हैं। फार्म पर उगने वाले सेब, आड़ू, खूबानी, स्ट्रॉबेरी, अंगूर, नेक्टरीन और कभी-कभार केले काटकर क्रीम के साथ। हरे सेब उबालकर खाए जाते हैं। मुझे क्रीम की जगह दही पसन्द आया।

दोनों मैकक्रिडी भाइयों की लम्बी-चौड़ी ज़मीन है। डंकन सुबह उठकर फार्म पर चला गया है। बड़ा भाई सायमन अपने परिवार के साथ फार्म पर रहता है। अब वह इधर आएगा। दुकान खोलेगा, मुर्गी-बत्तखों को छोड़ेगा, गायों का दूध निकालेगा फिर सब्ज़ियों की खरीद-बेच के लिए निकल जाएगा। तब तक दुकान सम्भालने के लिए सायमन की बेटी स्टार आ जाएगी। बेटे का नाम है ओशन। मज़ेदार है – तारा और समुद्र। 18-20 साल की स्टार असाधारण लड़की है – दुबली-पतली है मगर गायों को चारा देना, घास के पूले इधर से उधर करना जैसे काम भी खूब कर लेती है। नखरे नहीं करती कि हाथ खुरदुरे हो जाएँगे, या बाल खराब हो जाएँगे। पुरानी जींस जिन्हें फैशनबल माना जाता है उस पर खूब फबती है।

सायमन शाम को साढ़े-सात बजे फिर आया। सारे जानवरों को चारा-पानी देकर दड़बों में बन्द करना रोज़ का आखिरी काम है। इस समय उसके साथ दो काले मुस्टण्डे लेब्राडोर कुत्ते भी हैं। झुटपुटे के समय मुर्गियों की फिराक में लोमड़ियाँ अक्सर इधर आ निकलती हैं। उन्हें खदेड़ने में कुत्तों को खूब मज़ा आता है। डंकन का

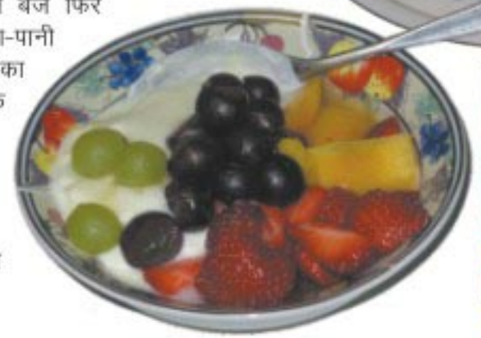

माल्डन का नमक

बूढ़ा बिल्ला कहीं भी गया हो, कुत्तों से राम-राम, श्याम-श्याम करने के लिए एक बार ज़रूर आएगा देखना।

मेरा अनुभव है कि बत्तख जब अपनी दुम पतवार की तरह दाएँ-बाएँ हिलाने लगे तो समझो उसका इरादा नेक नहीं है.

कितना दिलचस्प है कि डंकन की माँ किसान की बेटी थी और पिता लन्दन में प्रोफेसर। माँ ने इस पुश्तैनी घर को खूब सम्भालकर रखा। पिता ने इसे तरह-तरह की पुस्तकों और यंत्र-उपकरणों से भर दिया। घर में सौ तो घड़ियाँ होंगी। एक भूकम्प मापी यंत्र भी मुझे दिखाई दिया। टिक-टिक करते हुए बराबर चल रहा है। घर क्या अजायबघर ही है! जहाँ देखो वहाँ पुस्तकें, यंत्र, पुरानी तस्वीरें, सिक्के, जहाज़ की घण्टियाँ, घुड़सवारी का साजो सामान, ट्रॉफियाँ रखी हुई हैं। एक पुस्तक का विषय तो देखो कितना अनोखा है – भाँग के पौधे से घर बनाना।

मेरा कमरा पहली मंज़िल पर है। लकड़ी का चढ़ाव चढ़कर जाने के बाद बाँई ओर। सारे घर में पुराने ऊनी गलीचे बिछे हुए हैं। लकड़ी के ढीले तख्ते फिर भी पैरों तले चर्र चूँ करने से बाज़ नहीं आते। मेरे बिस्तर पर चार तहें कम्बल की और एक मोटी रजाई है। इन दिनों गर्मी का मौसम होने के बावजूद ठण्ड इतनी है कि मैं इन सब को ओढ़कर मज़े से सोता हूँ।

ऐसा नहीं लगता कि यह भेड़ा इतना खतरनाक है कि इसे कभी बाहर निलने ही नहीं दिया जाए.

घर क्या अजायबघर ही है

खिड़की के बाहर देवदार का ऊँचा पेड़ है। मैं ख्याली पुलाव पका रहा हूँ कि बड़े दिन की सुबह मेरी नींद खुली है। देवदार पर रात में गिरी बर्फ दिखाई दे रही है। मोत्ज़ार्ट का संगीत बज रहा है। अहाते से मुर्गे की बाग और गायों का अँग्रेज़ी में रम्भाना सुनाई दे रहा है। मैं हौले से लकड़ी की सीढ़ियाँ उतरकर रसोई घर में पहुँचता हूँ। लज़ीज़ टर्की और अखरोट की केक की खुशबू से मैं भर उठता हूँ...

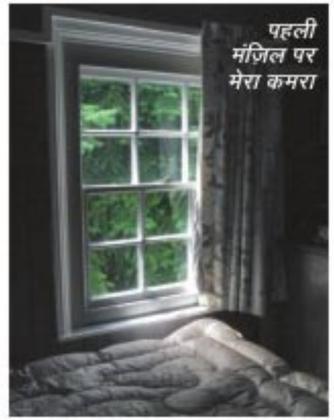

पहली मंज़िल पर मेरा कमरा

इन दिनों घर में रंग-रोगन चल रहा है। अगले रविवार पीछे के अहाते में गिरजे के सदस्यों का मेला है। ये गाँव के लोगों से नई-पुरानी अनुपयोगी वस्तुएँ ले आते हैं और छोटा-मोटा हाट लगाते हैं। सस्ते में वस्तुएँ बेचकर गिरजे के कोष में जमा करते हैं। पुताई का काम किम कर रही है।

जाँबाज़ किम

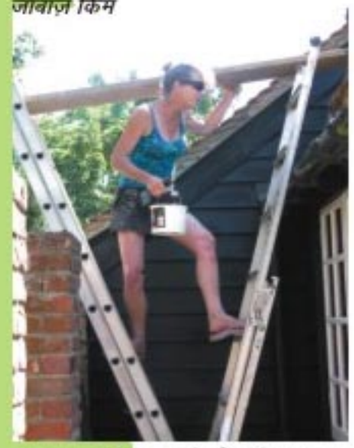

बड़ी जाँबाज़ लड़की है। बाँस-बल्लियाँ लगाकर वह छत की चिमनी तक जा पहुँचती है। शाम को अपनी खुली कार में बिठाकर मुझे समन्दर में नाव में सैर करने ले गई।

गिरजे के मेले का हाट

गिरजे के मेले में चीनी के पुराने बर्तनों

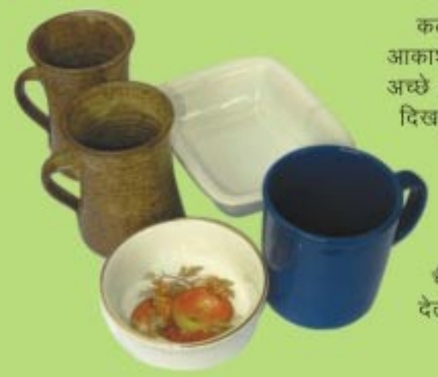

पर निशाना साधने का खेल था। मेला खत्म हो जाने के बाद बाकी बचे बर्तनों में से मैं कुछ छाँटकर ले आया हूँ। अब से मैं इसी नीले कप में चाय पिया करूँगा और भूरे कप में पेन्सिल-कलम वगैरह रखूँगा।

कल रात मैं आकाश में मृग नक्षत्र खोज रहा था। भारत में यह अप्रैल तक पश्चिमी आकाश में दिखाई देता है। मेरा अन्दाज़ था कि यह अब पश्चिमी देश के आकाश में अच्छे से दिखाई देगा। साइमन ने अपने घर जाकर उसे दूरबीन से खोजा। नहीं दिखाई दिया तो वह मुझे सप्तर्षि की कथा सुनाने लगा। बड़ा आश्चर्य हुआ यह सुनकर कि साइमन भारत में महीनों तक साधुओं के संग चिलम पीता भटकता फिरा था। किम तो इन्दौर की चाट-पानी पतासे याद कर चटखारे लेने लगती है।

दुनिया कितनी छोटी है? अरब, भूमध्य और अटलांटिक सागर (इंग्लिश चैनल) पार एक देहात में भी मुझे अपने देश और अपने शहर की वे ही बातें सुनाई देती हैं?